रचनाकार परिचय और सम्पर्क

गाँधी विचार के विद्वान **त्रिदीप सुहृद** साबरमती आश्रम, अहमदाबाद के निदेशक हैं।
tridip.suhrud@gmail.com

किरण देसाई सेंटर फ़ॉर सोशल स्टडीज़, सूरत में फ़ेलो हैं।
desai_kiran1@rediffmail.com

विख्यात राजनीतिक-समाजशास्त्री और विकासशील समाज अध्ययन पीठ के पूर्व-निदेशक **धीरूभाई शेठ** की चुनिंदा कृतियों का एक संकलन *सत्ता और समाज* वाणी द्वारा प्रकाशित हो चुका है।
dlsheth@csds.in

कई चर्चित ग्रंथों के रचियता वरिष्ठ समाजशास्त्री **योगेश अटल** आजकल एमपी इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंस रिसर्च, उज्जैन में प्रोफ़ेसर एमेरिटस हैं। yogatal@gmail.com

मणींद्र नाथ ठाकुर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सेंटर फ़ॉर पॉलिटिकल स्टडीज़ में ऐसोसियेट प्रोफ़ेसर हैं। manindrat@gmail.com

बद्री नारायण गोविंद बल्लभ पंत सोशल साइंस इंस्टीय्यूट में प्रोफ़ेसर हैं। bntiwari@gmail.com

इतिहासकार **चारु गुप्ता** दिल्ली विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। charugup7@gmail.com

कमल नयन चौबे नेहरू मेमोरियल म्युज़ियम ऐंड लाइब्रेरी, नई दिल्ली में जूनियर फ़ेलो हैं।
kamalnayanchoubey@gmail.com

इंद्रजीत कुमार झा दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग में अनुसंधानरत हैं।
indrajeetjha@gmail.com

नारीवादी आलोचक **रोहिणी अग्रवाल** रोहतक विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य की प्रोफ़ेसर हैं।
rohini1959@gmail.com

सदन झा सेंटर फ़ॉर सोशल स्टडीज़, सूरत में एसोसिएट फ़ेलो हैं। sadanjha@gmail.com

हिलाल अहमद विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में एसोसियेट फ़ेलो हैं।
ahmed.hilal@csds.in

अमितेश कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अनुसंधानरत हैं।
amitesh0@gmail.com

हिंदी की विख्यात कवि **अनामिका** नेहरू मेमोरियल म्युज़ियम एंड लाइब्रेरी, नई दिल्ली में फ़ेलो हैं।
anamikapoetry@gmail.com

अंकिता पांडेय दिल्ली विश्वविद्यालय के इंद्रप्रस्थ कॉलेज में राजनीति विज्ञान की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं।
ankitapandey1@gmail.com

मिथिलेश कुमार झा दिल्ली विश्वविद्यायल के राजनीति विज्ञान विभाग में अनुसंधानरत हैं। jhamk_21@yahoo.co.in

संजय कुमार विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में फ़ेलो हैं। sanjay@csds.in

विवेक रत्न दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग में शोधरत हैं। vivekratna.banka@gmail.com

तृप्ता शर्मा दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में अनुसंधानरत हैं। Stripta@gmail.com

आदित्य निगम विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में सीनियर फ़ेलो हैं। aditya@csds.in

संस्कृत के विख्यात विद्वान **राधावल्लभ त्रिपाठी** केंद्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति हैं। radhavallabh2002@gmail.com

अभय कुमार दुबे विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में फ़ेलो और भारतीय भाषा कार्यक्रमे निदेशक हैं। abhaydubey@csds.in

राकेश पाण्डेय विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में ऐसोसियेट फ़ेलो हैं। rakeshkpandey@csds.in

गिरीश कारनाड जाने-माने नाट्यकार, अभिनेता और निर्देशक हैं। karnad.girish@gmail.com

अतुल तिवारी रंगकर्मी और हिंदी फ़िल्मों के पटकथा-लेखक हैं। atulatultiwari@gmail.com

मृत्युंजय चटर्जी दिल्ली स्थित कलाकार और डिज़ाइनर हैं। mritunjay.chatterjee@gmail.com

राकेश पाण्डेय विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में एसोसिएट फ़ेलो हैं। rakeshpandey@csdc.in

वरिष्ठ पत्रकार **मनोहर नायक** दैनिक *जनसत्ता* और दैनिक *आज समाज* से जुड़े रहे हैं। nayak.manohar@gmail.com

चंदन शर्मा सराय और भारतीय भाषा कार्यक्रम में सक्रिय हैं। chandma@gmail.com

रविकांत विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में एसोसिएट फ़ेलो हैं। ravikant@csdc.in

प्रतिमान के लिए संदर्भ-साँचा

हिंदी के शोध-संसार में वैसे तो अब लोग बड़े पैमाने पर संदर्भन करने लगे हैं, लेकिन अराजकता या उदासीनता अभी-भी कम नहीं है। हमारी कोशिश होगी कि लम्बे अरसे में विकसित और निहायत लोकप्रिय शिकागो या हार्वर्ड मैनुअल जैसी वैश्विक संदर्भन प्रणालियों का मूलतः इस्तेमाल करते हुए उसे भाषा के स्थानीय व्यवहार के मुताबिक़ अनुकूलित करें। लेखक/लेखिकाओं से अपील है कि वे अपने आलेख का शब्द-संयोजन करते वक़्त इन चीज़ों का ख़याल ज़रूर रखें, ताकि हमें सम्पादन में और सजग पाठकों को पढ़ने में कम मेहनत करनी पड़े। शोधपत्र में नाना प्रकार के स्रोतों को संदर्भित करने का तरीक़ा नीचे मिसाल दे कर सिलसिलेवार समझाया गया है।

ख़याल रहे कि कुछ मामलों में हमारा तरीक़ा इन तरीक़ों से अलग है। पहली बात, हम मूल आलेख में संदर्भ न डालकर फ़ुटनोट का इस्तेमाल करेंगे, और लेख के आख़िर में एक ग्रंथ-सूची देंगे। दूसरी बात, हम फ़ुटनोट व ग्रंथावली दोनों ही जगहों पर डॉट का इस्तेमाल करेंगे, जबकि मूल आलेख में पूर्ण विराम का। और, हमारे यहाँ जैसा रिवाज है नाम वैसे ही रखेंगे, यानी पहले पहला नाम, फिर उपनाम, और ग्रंथावली भी हिंदी वर्णक्रमानुसार इसी ढर्रे पर चलेगी। हमारे यहाँ लेखक अपने नाम के पहले डॉक्टर/डॉ. या प्रोफ़ेसर/प्रो. लगाते देखे गए हैं, हम उनके छोटे रूप से भी परहेज़ करेंगे, सिवाय प्राथमिक स्रोतों के, जैसे मोती बी.ए. अगर अपने तख़ल्लुस के साथ लिखते थे तो हम उनकी तमाम रचनाएँ मोती, बी.ए. के नाम से ही डालेंगे। संक्षेप में नाम लिखते समय डॉट का प्रयोग करें और स्पेस न दें, जैसे : जी.पी. श्रीवास्तव, न कि जी. पी. श्रीवास्तव। विख्यात संस्थाओं या देशों के नाम लिखते समय डॉट लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे : सीएसडीएस, न कि सी.एस.डी.एस.; या यूके, न कि यू.के.।

हम नुक़्ते का प्रयोग भी करेंगे, क्योंकि यह कुछ अंग्रेज़ी और उर्दू शब्दों के लिए ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर, ज़ुल्फ़िक़ार बुख़ारी, ज़िज़ेक, ज़ीटीवी, क़यामत, फ़रमाइश, ग़ज़ल, ख़याल, वग़ैरह। उसी तरह, हम हमेशा अर्धचंद्र या चंद्र बिंदु का इस्तेमाल करेंगे, जहाँ भी लगता है, जैसे कि 'फ़ुटबॉल' या 'ऑल इंडिया रेडियो' या फिर 'हँसना' या 'पाँच' में। ख़याल रहे कि अगर किसी भी दस्तावेज़ में अगर नुक़्ते / चंद्र बिंदु का इस्तेमाल मूल में नहीं हुआ है तो हम अपनी तरफ़ से न लगाएँ। उसी तरह अगर देसी पंचांग/संवत का प्रयोग हुआ है तो उसी का इस्तेमाल करें। जहाँ तारीख़ साफ़ नहीं / अनुपलब्ध है, वहाँ इसका ज़िक्र ज़रूर हो। कोलन या विसर्ग लगाते समय ध्यान रखें कि उसके दोनों तरफ स्पेस हो। हाँ, अगर किसी अंक के तुरंत बाद विसर्ग लगाया जा रहा है तो स्पेस केवल उसके बाद आएगा। हर जगह अंग्रेज़ी के अंकों का प्रयोग करें।

फ़ुटनोट **में किताब के संदर्भन का क्रम :**

पहला फ़ुटनोट इस प्रकार हमेशा पूरा लिखा जाएगा—

लेखक का नाम, किताब का नाम (टेढ़े अक्षरों में), फिर कोष्ठक में प्रकाशन का वर्ष, फिर प्रकाशक, फिर प्रकाशन की जगह, फिर कोलन लगा कर पृष्ठ संख्या.

मिसाल : सुमित सरकार (1985), *मॉडर्न इंडिया : 1885-1947,* मैक्मिलन, लंदन : 21.

लेख के अंत में दी जाने वाली संदर्भ-सूची में किताब के संदर्भन का क्रम :
सुमित सरकार (1985), *मॉडर्न इंडिया : 1885-1947,* मैक्मिलन, लंदन : 1985.
ज़ाहिर है कि यहाँ पृष्ठ संख्या नहीं देनी है।

अगर वही संदर्भ फ़ुटनोट में दोबारा आ रहा है, तो महज़ लेखक/किताब के नाम से काम चला सकते हैं, साथ में विसर्ग लगा कर पृष्ठ संख्या देना लाज़मी होगा। अगर लेखकों या सम्पादकों के दो नाम हैं तो पूरे जाएँगे, अगर दो से ज़्यादा, तो दोनों के बाद वग़ैरह लगाएँ। लेकिन पहले फ़ुटनोट और ग्रंथ-सूची में सारे नाम, पूरे जाएँगे। अगर किताब एक से ज़्यादा संस्करणों छप चुकी है तो जिस संस्करण का इस्तेमाल हुआ है, उसके ज़िक्र के साथ ब्रैकेट में मूल प्रकाशन का साल भी जाएगा। अगर एक ही रचनाकार की एक नाम से एक ही साल की दो शीर्षक-रचनाएँ उद्धृत की गई हैं तो उनके हवाले में भेद करने के लिए फ़ुटनोट/ग्रंथावली में रचना के नाम के बाद प्रकाशन वर्ष के साथ क, ख...आदि लगाया जाए।

मिसाल : रामचंद्र गुहा, (१९८२ क) 'फ़ॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश ऐंड पोस्ट-ब्रिटिश इंडिया : अ हिस्टोरिकल एनालिसिस', इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 18, अंक 44: 1882-1896.

(ख), 'फॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश एंड पोस्ट-ब्रिटिश इंडिया : ए हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* खंड 18, अंक 45: 1940-1947.

अगर किताब अनूदित है तो अनुवादक का नाम फ़ुटनोट और ग्रंथवाली में किताब के नाम के बाद कोष्ठक में आएगा :

मिसाल : मन्ना डे (2008), *यादें जी उठीं: एक आत्मकथा,* अंग्रेज़ी से अनुवाद : रक्षा शुक्ला, पेंगुइन बुक्स, नयी दिल्ली.

सम्पादित किताब में छपे लेख :

मिसाल : हरीश त्रिवेदी, 'ऑल काइंड्स ऑफ़ हिंदी : दि इवॉल्विंग लैंग्वेज ऑफ़ हिन्दी सिनेमा', आशिस नंदी व विनय लाल (सम्पा.) *फ़िंगरप्रिंटिंग पॉपुलर कल्चर : द मिथिक एण्ड दि आइकॉनिक इन इंडियन सिनेमा,* ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली : 51-86.

जर्नल-आदि में छपे लेख :

रचनाकार (प्रकाशन वर्ष), 'लेख का नाम', *पत्र का नाम,* खण्ड, अंक, किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक, आख़िर में अगर ख़ास पृष्ठ का ज़िक्र करना हो तो.

मिसाल : प्रेमलता वर्मा (2001), 'इब्ने-मरियम हुआ करे कोई', *बहुवचन,* वर्ष 2: अंक 8 (जुलाई-सितंबर): 110-128, 115.

पत्रिका के आलेख :

मिसाल : बजरंग बिहारी तिवारी (2012), 'केरल में दलित आंदोलन और दलित साहित्य', *कथादेश,* वर्ष 32: अंक 5 (जुलाई): 76.

अख़बार में छपी रचना या रपट :

लेख : दीपानिता नाथ, 'रेडियो रिवाइंड, *आई : द संडे एक्सप्रेस,* नई दिल्ली, 10 अगस्त, 2008.

रपट : 'यह क्षेत्र हिंदी में संकट का समय : असगर', *जनसत्ता* (2005), दिल्ली, 20 मार्च : 7.

छपे हुए साक्षात्कार के हवाले के लिए : साक्षात्कार देने वाले का नाम > शीर्षक व बातचीत करने वाले का नाम उद्धरण चिह्नों के बीच > किताब है तो लेखक से शुरू करके किताब वाला संदर्भन, अगर पत्रिका है तो पत्रिका वाला।

मिसाल : विश्वनाथ त्रिपाठी, 'रामविलास शर्मा 1950 में बीटीआर वाले माने जाते थे : अजेय कुमार से बातचीत), *उद्भावना* (रामविलास शर्मा महाविशेषांक : सम्पा. प्रदीप कुमार), अंक 104: 199

अगर बातचीत ख़ुद लेखक/लेखिका ने की है तो ज़िक्र यूँ होगा : लेखक/लेखिका द्वारा साक्षात्कार, 13 अक्टूबर, 2005, नयी दिल्ली.

अभिलेखागार की सामग्री का हवाला :

होम डिपार्टमेंट, 42-48/नवंबर 1916, ए. जेल्स, नैशनल आर्काइव्ज़ ऑफ़ इंडिया, (आगे एनएआई).

अदालती मामलों / फ़ैसलों का हवाला यूँ दिया जायेगा :

ऑल इंडिया आईटीडीसी वर्कर्स यूनियन एवं अन्य बनाम आईटीडीसी एवं अन्य, (2006). 2007एआईआर 301, (2006) 10 एससीसी 66.

विश्व व्यापी वेब से ली गयी सामग्री का हवाला यूँ दिया जायेगा :

मिसाल : विकीपीडिया पर 'पान सिंह तोमर' : http://en.wikipedia.org/wiki/Paan_Singh_Tomar; 28 जुलाई 2012 को देखा गया.

अगर प्रविष्टि हिंदी में है तो उसे हिंदी में दिखाएँ: http://hi.wikipedia.org/wiki/राजेश खन्ना. कई बार वेब पतों से नक़ल-चेपी करते हुए भारतीय भाषाओं की लिपि बदलकर अबूझ हो जाती है, जिससे बचने का उपाय यह है कि अंग्रेज़ी वेब-पते की नक़ल-चेपी करते समय देसी सामग्री को यथावत अपने वर्ड प्रोसेसर में अलग से टंकित करें.

चलती का नाम गाड़ी, पार्ट-4: यूट्यूब: http://www.youtube.com/watch?v=KWqkCpybNLo&feature=g-vrec; 30 जुलाई 2010 को संदर्भानुसार देखा/सुना/पढ़ा गया.

अगर लेख फ़िल्म-केंद्रित है, तो ग्रंथावली के साथ फ़िल्मावली भी देनी होगी, जिसमें फ़िल्म का नाम, साथ में निर्माता/निर्देशक और रिलीज़ हुए साल का ज़िक्र ज़रूरी होगा।

मिसाल : *अब दिल्ली दूर नहीं* आरके फ़िल्म्स, निर्देशक : अमर कुमार, 1957.

लेकिन मूल आलेख में ब्रैकेट में सिर्फ़ फ़िल्म का नाम व रिलीज़ वर्ष के ज़िक्र से काम चल जाएगा : (*अब दिल्ली दूर नहीं,* 1957).

पहला हवाला पूरा होगा, लेकिन दूसरे में संक्षेपण का सहारा लिया जाए, लेकिन कुछ इस तरह कि संदर्भ पहचानने में भ्रम की गुंज़ाइश न रहे।

मिसाल: अनामिका (2008), *दस द्वारे का पींजरा,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली : 145.

दूसरी बार आने पर, *दस द्वारे का पींजरा* के बाद विसर्ग और पृष्ठ संख्या पर्याप्त होगा।

अगर संदर्भ लगातार फ़ुटनोट में हैं, तो 'वही : पृष्ठ संख्या' से काम चल जाएगा, अगर पृष्ठ भी नहीं बदला तो सिर्फ़ 'वही' पर्याप्त होगा।

भारतीय भाषा कार्यक्रम

पिछले बारह साल से विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) का भारतीय भाषा कार्यक्रम समाज-विज्ञान और मानविकी में हिंदी के चिंतन-जगत को समृद्ध करने की परियोजना चला रहा है। अभी तक चार ग्रंथमालाओं (लोक-चिंतन ग्रंथमाला, लोक-चिंतक ग्रंथमाला, सामयिक विमर्श ग्रंथमाला और सरोकार ग्रंथमाला) के तहत वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पंद्रह से ज़्यादा पुस्तकों का बड़े पैमाने पर स्वागत हुआ है। इन ग्रंथमालाओं के तहत लोकतंत्र, भूमंडलीकरण, दलित और आधुनिकता, सेकुलरवाद, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रवाद, राजनीतिक प्रणाली, नारीवाद और सेक्शुअलिटी जैसे विषयों पर उच्चकोटि की सामग्री प्रकाशित की गयी है। अपने शुरुआती वर्षों में कार्यक्रम का ज़ोर अंग्रेज़ी में उपलब्ध समाज-चिंतन की उच्च-स्तरीय रचनाओं को अनुवाद और सम्पादन के ज़रिये हिंदी में लाने पर था। हाल ही में इस कार्यक्रम ने अंग्रेज़ी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी अनुसंधानपरक समाज-चिंतन और उसके साथ जुड़ी हुई ज्ञानमीमांसक चुनौतियों से जुड़े प्रश्नों पर समग्र रूप से विचार करना शुरू किया है। इसीलिए अंग्रेज़ी से अनुवाद और सम्पादन की प्रक्रियाओं को दी गई प्रमुखता क़ायम रखते हुए अब यह कार्यक्रम हिंदी में अनुसंधानपरक समाज-चिंतन के मूल लेखन को प्रोत्साहन देने की दिशा में बढ़ रहा है। समाज-विज्ञान और मानविकी की पूर्व-समीक्षित पत्रिका प्रतिमान समय समाज संस्कृति का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया गए एक अहम क़दम है जिसकी परणति आगे चल कर अनुसंधान और लेखन की एक सघन और बहुमुखी योजना में होगी। फ़िलहाल परियोजना हिंदी-जगत तक ही सीमित है, लेकिन जल्दी ही अन्य भारतीय भाषाओं में पहलक़दमियाँ लेने की कोशिशें की जाएँगी।

सदस्यता प्रपत्र

मैं विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) के भारतीय भाषा कार्यक्रम के लिए वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक पूर्व-समीक्षित पत्रिका प्रतिमान : समय समाज संस्कृति का / की ग्राहक __________ वर्षों के लिए बनना चाहता / चाहती हूँ।

	एक अंक	दो वर्ष	पाँच वर्ष
संस्थागत	₹500 डाक-ख़र्च समेत ☐	₹2,000 डाक-ख़र्च समेत ☐	₹4,500 डाक-ख़र्च समेत ☐
व्यक्तिगत	₹200+25 (डाक-ख़र्च) ☐	₹800 डाक-ख़र्च समेत ☐	₹1,800 डाक-ख़र्च समेत ☐
विदेशों के लिए	$20+डाक-ख़र्च अतिरिक्त या किसी अन्य मुद्रा की समकक्ष राशि ☐		

____________ बैंक चेक संख्या / डिमांड ड्राफ्ट संख्या ____________ दिनांक __________

राशि __________ नयी दिल्ली (New Delhi) में देय संलग्न है।

ग्राहक का नाम (स्पष्ट शब्दों में) : ____________________

व्यवसाय : ____________________

संस्थान : ____________________

पता : ____________________

____

पिन कोड : __________ राज्य : __________

फोन : (कार्यालय)__________(निवास)__________ (मोबाइल) __________

ई मेल : ____________________

नोट : भुगतान चेक (स्थानीय) / डिमांड ड्राफ्ट प्रतिमान या PRATIMAN के नाम या मनीऑर्डर द्वारा इस पते पर भेजे जाने चाहिए।

प्रतिमान
वास्ते वाणी प्रकाशन,
4695, 21-ए, दरिया गंज, नयी दिल्ली-110002